मध्यप्रदेश के प्रमुख जनजातीय हस्तशिल्प उद्योग

डॉ. खुदैजा परवीन अंसारी, सहायक प्राध्यापक, (अर्थशास्त्रं) मध्यप्रदेश के प्रमुख जनजाति हस्तशिल्प उद्योग शासकीय महाविद्यालय, पथरिया, जिला दमोह (म.प्र.) Mob—9111953637
Email id - khudaija2010@gmail.com

आदिवासी शब्द से सामान्यतः आशय यह लिया जाता है कि यह भारत के पुरातन निवासी हैं। इन्हें प्रकृति पुत्र, जनजातीय लोग, गिरिजन,वनवासी,आदिम जाति तथा वन्यजाती भी कहा जाता है। भारत की आदिम जनजातियो को विद्वानों ने अलग–अलग नामों से पुकारा है। प्रसिद्ध नेतृत्वशास्त्री एच. एच. रिजले, लेके, ग्रियर्सन, सोलर्ट, सेवविक, मार्टिन, तथा भारतीय समाज सुधारक ठक्कर ने इन्हें ,"आदिवासी शब्द से संबोधित किया।"[1] हट्टन ने इन्हें "प्राचीन जनजाति कहां है।"[2] और बेंस ने "वन्यजाति कहा है।"[3] आदिवासी शब्द अपने आप में असीम, अनुपम और अद्‌भुत इतिहास संजोए हैं। अद्‌भुत समुदाय, विविधता पूर्ण जीवन शैली, दुर्गम निवास, खानपान, वेशभूषा, परंपरागत हस्तशिल्प भाषा एवं संस्कृति से लेकर जीवन का प्रत्येक पहलू समाज की मुख्यधारा से आज भी भिन्न है। इनका सामाजिक आर्थिक जीवन कुछ सीमा तक आज भी आदिकालीन है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में बदलते परिवेश के कारण इनकी जीवन शैली में अमूल चूल परिवर्तन आए हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में विश्व की कई जनजातियों के अस्तित्व को समाप्त ही कर दिया है। वर्तमान में कई जनजातियां आर्थिक सामाजिक पिछड़ेपन से जूझ रही है। इस संदर्भ में भारतीय प्रागैतिहासिक काल के मूल निवासियों के संबंध में अकादमिक दृष्टि से सर्वप्रथम अध्ययन करने वाले सर हर्बर्ट रिसले ने लिखा है कि "भारत में निवास करने वाले आदिवासियों की सात प्रजातियां हैं जिनमें कुछ प्रजातियां आर्थिक सामाजिक रूप से अत्यंत पिछड़ी हैं उनको विकास की मुख्यधारा से जुड़ने के लिए शेष प्रजातियों द्वारा प्रयास किए जाने चाहिए।''[4] यह आदिवासी भले ही आधुनिकता में पिछड़े हो परंतु हस्तशिल्प के क्षेत्र में उनकी समृद्ध परंपरा रही है। आदि काल से ही ये पाषाण, मृद, काष्ठ, धातुओ, बॉस, जूट, रेशों, पत्तों आदि से कलात्मक वस्तुएं बनाने में बहुत निपुण रहे हैं। उनकी परंपरागत कला को परिष्कृत कर उन्हें विश्व बाजार में निर्यात कर विदेशी मुद्रा प्राप्त की जाती है। इससे इन जनजातियों की विशिष्ट पहचान को संरक्षण मिलता है साथ ही इनका आत्म गौरव भी बढ़ता है। मध्यप्रदेश में आदिवासी हस्तशिल्प की समृद्धि एवं गौरवशाली परंपरा रही है।

शोध उद्देश्य– प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

- मध्यप्रदेश की जनजातियों के हस्तशिल्प उद्योग की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
- हस्तशिल्प उद्योगों से रोजगार की संभावनाओ का पता लगाना।
- जनजातीय हस्तशिल्पियों की समस्याओं का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत शोधपत्र द्वितीयक और समंको पर आधारित है जिनका संकलन उपलब्ध संबध्द प्रकाशित आलेखों, पत्र–पत्रिकाओं ,पुस्तकों एवं जनजातियों से संबंधित ग्रंथ एवं लेख, जनजातीय मंत्रालय, जनगणना, मध्यप्रदेश आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्था से संकलित किए गए हैं जिसके कारण निष्कर्ष की विश्वसनीयता द्वितीयक समंको पर आधारित है।

मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजातियां

जनजातीय जनसंख्या की दृष्टि से मध्यप्रदेश, भारत का सबसे बड़ा राज्य है। मध्यप्रदेश में कुल 47 जनजातियां पाई जाती हैं । राज्य में सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या अलीराजपुर जिले में तथा सबसे कम भिंड जिले में पाई जाती है। मध्यप्रदेश में 2011 की जनसंख्या के आधार पर 15316784 व्यक्ति जनजातियों के हैं। जिसमें 7719404 पुरुष तथा 7597380 स्त्रियां हैं जो कि राज्य की जनसंख्या का 21.10 है।[5] इस प्रकार मध्यप्रदेश देश का ऐसा राज्य है जहां हर पांचवा व्यक्ति अनुसूचित जनजाति का है। मध्यप्रदेश में कुल 7 संभाग में 20 जिलों में 89 आदिवासी विकास खंड स्थापित है।[6] मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियां निम्नानुसार हैं–

• **भील** मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति है इनका निवास क्षेत्र धार, झाबुआ, खंडवा, पश्चिमी निमाड़ में है। इन्हें बाल्मीकि और एकलव्य के वंशज मानते हैं। भील शब्द तमिल भाषा के 'विल्लूवर' शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है 'धनुष' चूकिं ये धनुषधारी होते हैं अतः इन्हें भील कहा जाता है इसकी मुख्य उपजातियां बरेरा, भिलाला तथा पटालिया हैं।

• **गोंड** जनसंख्या की दृष्टि से मध्यप्रदेश की दूसरी बड़ी जनजाति है यह जनजाति मध्यप्रदेश के सभी जिलों में निवास करती है लेकिन इसका मुख्य क्षेत्र नर्मदा के दोनों ओर तथा विंध्य व सतपुड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों हैं। बैतूल, होशंगाबाद, मंडला, सागर ,छिंदवाड़ा, बालाघाट, शहडोल इसके मुख्य निवास स्थल हैं। इनकी उप जातियों में परधान, अगरिया, ओझा, नगारची, दुलिया प्रमुख है।

• **कोरकू** जनजाति बैतूल, छिंदवाड़ा, होशंगाबाद एवं खंडवा आदि जिलों में निवास करती है। बवांरी,रूमा, बोडोया, मोबासा तथा नहाला इसकी प्रमुख उपजातियां हैं।

• **भारिया** जनजाति मध्यप्रदेश के जबलपुर, छिंदवाड़ा जिलों में निवासरत है। इनकी प्रमुख उपजातियां भूमियां, भुईहारा एवं पांडो है।

• **कोल** जनजाति रीवा एवं जबलपुर में निवास करती है। रोडैल और रोहिया इसकी उपजातियां हैं।

• **बैगा** यह जनजाति बालाघाट, उमरिया, अमरकंटक एवं मंडला में निवास करती हैं।

• **सहरिया** जनजाति गुना, शिवपुरी एवं मुरैना में निवासरत है।

• **अगरिया** मंडला, सीधी एवं शहडोल में निवास करती है।

• **सउर** का निवास स्थान छतरपुर, सागर, दमोह, पन्ना और टीकमगढ़ है।

• **परधान** जनजाति के लोग छिंदवाड़ा, बैतूल, सिवनी तथा बालाघाट में निवास करते हैं।

• **खैरवार** जनजाति के लोग छतरपुर, सीधी, पन्ना और शहडोल में निवासरत हैं।[7]

मध्यप्रदेश के प्रमुख जनजातिय हस्तशिल्प उद्योग

मध्य प्रदेश के विभिन्न अंचलों में आदिवासी जनसंख्या का बाहुल्य होने के कारण विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प की उत्पत्ति हुई है मध्य प्रदेश की जनजातियों का एक व्यवसाय हस्तशिल्प या दस्तकारी भी है। अनेक प्रकार की दस्तकारी का काम करने वाली जनजातियां हस्तशिल्प के सहारे जीवन यापन करती हैं। हस्तशिल्प को आय में वृद्धि करने के लिए एक सहायक व्यवसाय के रूप में बहुत सी जनजातियां अपनाए हुए हैं। कोरबा और अगरिया लोहा गलाकर स्थानीय उपभोग हेतु औजार बनाते हैं। डिंडोरी की बैगा जाति भी पेड़ों की जड़ों, लकड़ी के मुखोटे, बांस के पंखे आदि बनाते हैं। मारिया, गोंड वन उत्पाद से स्प्रिट तैयार करते हैं। धातु की वस्तुएं बनाते हैं । झाबुआ के भील भिलाला पुराने कपड़ों और सूती रेशों से सुंदर दरिया और गद्दियां बनते हैं । साओरा धातु कर्म का कार्य और बर्तन बनाने का कार्य करते हैं । आपातानी जनजाति चाकू और तलवार बनाने में कुशल हैं । घरेलू बर्तन, टोकरी, संगीत वाद्ययंत्र, हथियार चटाई, रस्सी, थारू जनजाति द्वारा बनाई जाती है । इस प्रकार हस्तशिल्प के माध्यम से जनजातियां अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करती है।[8] भारत के आदिवासियों की आर्थिक जीवन के अध्ययनों से स्पष्ट है कि यह निम्नानुसार विकसित होकर वर्तमान स्तर तक आया है–

(1)शिकार करने और भोजन इकट्ठा करने की अवस्था
(2)पशुपालन की अवस्था
(3)कृषि अवस्था
(4)दस्तकारी अवस्था

कृषि कार्य के लिए मानव को बहुत से यंत्रों की जरूरत पड़ी । पहले मानव ने पत्थरों से सामान्य यंत्र बनाये और धीरे–धीरे अच्छे यंत्र बनाने लगा और हस्तशिल्प या दस्तकारी प्रारंभ हुई । इस अवस्था में मानव ने टोकरी बनाना, सूत कातना, कपड़ा बुनना, रस्सी बनाना, चटाई बुनने का काम बेंत का सामान, लोहे के औजार , मिट्टी के बर्तन, धातु के बर्तन, लकड़ी के औजार बनाना इत्यादि प्रमुख हस्तशिल्प कार्य उल्लेखनीय है।[9] मध्य प्रदेश के विभिन्न अंचलों में हस्तशिल्प उद्योगों की परंपरागत संस्कृति रही है, जो कि मुख्य रूप से मध्यप्रदेश के जनजाति समुदाय के लोगों का मुख्य व्यवसाय है । जिसमें वे पारंगत हैं जो उनकी आजीविका एवं जीवनयापन का आधार है। हम यहां मध्य प्रदेश कुछ प्रमुख आदिवासी हस्तशिल्प उद्योग का अध्ययन करेंगे–

पाषाण शिल्प– पाषाण शिल्प द्वारा पत्थरों पर बहुत ही कलात्मक नक्काशी की जाती है। यह कार्य पाषाण युग से ही होता आ रहा है। मध्यप्रदेश के आदिवासी कलाकारों के लिए पत्थर पर नक्काशी करना अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है। मध्य प्रदेश में पाषाण शिल्प का विकास मंदसौर एवं रतलाम जिले में हुआ है जहां गुर्जर जाट भील गायरी जातियों द्वारा पत्थरों से दैनिक उपयोग की विभिन्न वस्तुओं एवं मूर्तियां बनाई जाती हैं।

गुड़िया शिल्प– मध्य प्रदेश के ग्वालियर क्षेत्र गुड़िया बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रदेश में नए पुराने कपड़ों व कागजों से गुड़िया बनाने की परंपरा है। झाबुआ जिले में भीली गुड़िया के लिए प्रसिद्ध है।
कंघी शिल्प–कंघी शिल्प का कार्य बंजारा जनजाति द्वारा किया जाता है। मध्यप्रदेश में कंघी बनाने के केंद्र रतलाम नीमच और उज्जैन हैं। आदिवासियों द्वारा कंघी पर अलंकरण भी किया जाता है।
लाख शिल्प– मध्यप्रदेश में उज्जैन, रतलाम, मंदसौर एवं महेश्वर, उमरिया लाख शिल्प केंद्र हैं। यह कार्य लखार जनजाति द्वारा किया जाता है जिसमें लाख के कलात्मक खिलौने पेटियां चूड़े पशु–पक्षी ,आदि वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।
धातु शिल्प– मध्यप्रदेश में अनेक प्रकार के धातु शिल्प जैसे आभूषण एवं मूर्तियां आदि बनाए जाते हैं। पीतल एवं तांबे से मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले में कलात्मक मूर्तियां बनाई जाती हैं।
टेराकोटा शिल्प– इस शिल्प में भिन्न–भिन्न प्रकार के खिलौने ,सजावटी सामान, प्रतिमाएं एवं गमले बनाए जाते हैं। यह मध्यप्रदेश के मंडला जिले में निवास करने वाली जातियां गोंड, प्रधान, धीमा, जिनवार और ओरिया, पटरी आदि द्वारा यह कार्य किया जाता है।
मृद शिल्प– मनुष्य द्वारा प्राचीन समय से ही मृद से अनेक प्रकार की शिल्प जैसे मिट्टी के बर्तन, मिट्टी के खिलौने, मिट्टी के घर, मिट्टी की मूर्तियां बनाए जा रहे हैं। मध्यप्रदेश के शहडोल, रीवा, बैतूल, मंडला जिला के मृद शिल्प विशेष स्थान रखते हैं।
काष्ठ शिल्प– काष्ठ शिल्प मध्यप्रदेश में मुख्य रूप से मंडला, होशंगाबाद, धार और झाबुआ क्षेत्र के आदिवासी समुदाय की परंपरागत शिल्प है। कष्ट शिल्प में मुख्य रूप से बैलगाड़ी के पहिए, दरवाजे, फर्नीचर आदि अन्य दैनिक उपयोगी एवं कलात्मक वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के पातालकोट क्षेत्र में भारिया आदिवासी लकड़ी पर सुंदर नक्काशी करते हैं। मंडला एवं डिंडोरी क्षेत्र के गोंड एवं परधान आदिवासी द्वारा लकड़ी पर सुंदर नक्काशी से मुखोटे, विवाह स्तंभ एवं दरवाजे आदि बनाए जाते हैं। झाबुआ एवं धार क्षेत्र के भील तथा भिलाला आदिवासी लकड़ी पर सुंदर नक्काशी करते है। अभी इस कला का उपयोग शहरी बाजार हेतु कर रहे हैं।
बांस शिल्प– मध्यप्रदेश के मंडला तथा झाबुआ की जनजातियों द्वारा बांस की कलात्मक वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। इसके अंतर्गत सोफा, छलनी, ओड़िया, मछली पकड़ने का फंदा आदि में बांस का प्रयोग किया जाता है।
धातु शिल्प– मध्यप्रदेश के बैतूल क्षेत्र में रहने वाली भरेवा धातु शिल्पियों द्वारा आदिवासियों के लिए देवी देवताओं की मूर्तियां बनाई जाती हैं। यह आदिवासी शिल्प कृतियां शहरी उपभोक्ताओं हेतु कला मेलों में भी बेची जाने लगी हैं।
तीर धनुष कला– तीर धनुष कला मध्य प्रदेश की भील, पहाड़ी, कमार, कोरबा आदि जातियों में विशेष प्रचलित है तीर धनुष बास, मोर पंख, लकड़ी, लोहा रस्सी आदि से बनाए जाते हैं।
छीपा शिल्पा– छीपा शिल्प हाथ से कपड़े पर बनाया जाता है इसमें भील आदिवासियों के विभिन्न जातीय प्रतीकों का समावेश होता है उज्जैन के छीपा शिल्पा को भेरूगढ़ के नाम से देश एवं विदेश में जाना जाता हैं [10]

आदिवासी हस्तशिल्पयो की प्रमुख समस्याएं एवं सुधार हेतु सुझाव

अशिक्षा एवं रूढ़िवादिता

इन हस्तशिल्प उद्योग से जुड़े अधिकांश आदिवासी अशिक्षित या कम शिक्षित होने के साथ–साथ रूढ़िवादिता की जंजीरों में आज भी जकड़े हुए हैं। क्योंकि यह समुदाय आदि काल से ही वनो दूरस्थ दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र में निवास करते हैं। इसलिए यह शिक्षा एवं ज्ञान से वंचित रहे। स्वाधीन भारत में जनजातीय क्षेत्रों में भी विद्यालय छात्रावास खोले गए । जिससे काफी लोग शिक्षित हुए उन्हें अपना आर्थिक सामाजिक विकास भी किया लेकिन जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग आज भी अशिक्षित है।

परंपरागत रोजगार का छिन जाना

जनजातियों का एक बड़ा भाग विभिन्न हस्तशिल्प उद्योग जैसे पत्थर का सामान बनाना दस्तकारी एवं खिलौने बनाना टोकरी बनाना, चटाई बनाना, बांस एवं लकड़ी का सामान बनाकर अपने परिवार की विभिन्न सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते थे परंतु वर्तमान समय में प्लास्टिक एवं पेपर उद्योग ने इन हस्तशिल्प से इनका रोजगार छीन लिया है और इन हस्तशिल्प उद्योग का पतन हो गया।

जागरूकता की कमी

जनजाति क्षेत्रों में जागरूकता की कमी के कारण वे अपने आर्थिक विकास को महत्व नहीं देते और पिछड़े बने रहते हैं भी परंपरागत जीवनशैली से ही प्रसन्न रहें इस कारण आदिवासी नवीन परिस्थिति में उनका आर्थिक सामाजिक विकास कैसे होगा!

प्रशिक्षण की कमी

प्रशिक्षण की कमी इन आदिवासी हस्तशिल्पयों की एक प्रमुख समस्या है जिसके अभाव में ये हस्तशिल्पी अपना विकास नहीं कर सकते क्योंकि प्रशिक्षण के द्वारा इन्हें नई नई तकनीक से अवगत करा कर इनकी उत्पादकता एवं गुणवत्तामें वृद्धि करके इनकी आयको बढ़ाया जा सकता है।

दुर्गम स्थानों में निवास

अधिकांश जनजातीय व्यक्ति आदिकाल से ही ऐसे दुर्गम स्थानों पर रहते हैं जो एकांत में है जिससे उनका संपर्क समाज के विकासशील लोगों से नहीं हो पाता है। उन्हें अपने उत्पाद को स्थानीय बाजार में ही बेचना पड़ता है। आवागमन के साधनों के अभाव के कारण यह अतिरिक्त उत्पाद का उत्पादन ही नहीं करते जिससे यह सदैव जीविका उपार्जन से अतिरिक्त आय प्राप्त नहीं कर पाते।

स्वास्थ्य एवं सुरक्षा संबंधी समस्याएं

अधिकतर हस्तशिल्पी व्यवसाय जन्य स्वास्थ्य के खतरों से परिचित नहीं इसका एक कारण तो यह है कि यह असंगठित हैं और दूसरा कारण यह चोट और नुकसान को पारंपरिक व्यवसाय का एक जरूरी हिस्सा मानकर चलते हैं।

कच्चे माल की समस्या

हस्तशिल्प संबंधी उत्पाद के निर्माण के लिए लकड़ी मिट्टी कांच कपड़ा रेशे पत्थर, धातु, बांस, बैत, सुतली घास, जूट, सन ,लाख, रेशम आदि कच्चे पदार्थों की आवश्यकता होती है जिससे दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं का निर्माण करते हैं यह पदार्थ उन्हें स्थानीय स्तर पर प्राकृतिक रूप से प्राप्त हो जाते थे परंतु वर्तमान समय में वन विनाश नगरीकरण एवं औद्योगिकरण के कारण उन्हें कच्चे माल की समस्या का सामना भी करना पड़ रहा है।

मधपान का प्रचलन

अधिकांश जनजातियों में मद्यपान का प्रचलन है पहले आदिवासी अपनी आवश्यकताओं को स्वयं शराब बनाकर पूरा कर लेते थे किंतु सरकार द्वारा कच्ची शराब बनाने पर प्रतिबंध लगाने के बाद यह बाजार से उसका क्रय करते हैं जिससे उनकी आय का एक बड़ा इसीमें व्यय हो जाता है।

वित्तीय सहायता प्राप्ति की प्रक्रिया जटिल होना

हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए सरकार विभिन्न प्रकार की वित्तीय सहायता अनुदान देती है लेकिन इस सहायता को प्राप्त करने की प्रक्रिया जटिल होने के कारण यह शिल्प उनके लाभों से वंचित रह जाते हैं और ऊंची ब्याज दरों पर साहूकार महाजनों से ऋण के जाल में फस जाते है।

सरकारी योजनाओं से अनभिज्ञता

अधिकांश शिल्पी उदासीन एवं अशिक्षित होने के कारण सरकार द्वारा हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए एवं शिल्पयो को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से बनाई जाने वाली योजनाओं से अभिज्ञ है और उनका लाभ नहीं उठा पाते।

लागत संबंधी समस्या

हस्तशिल्प उद्योग छोटे पैमाने पर स्थापित किए जाते हैं जिससे उनका उत्पादन व्यय बहुत अधिक होता है। अधिकतर शिल्प परंपरागत आधार पर कार्य करते हैं और कोई वैज्ञानिक पद्धति नहीं अपनाते जिससे मशीनी उत्पादन की तुलना में उनके उत्पादों की लागत अधिक होती हैं।

विपणन संबंधी समस्या

उत्कृष्ट हस्तशिल्प की राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय मांग बहुत अधिक होती है और उनकी कीमत भी अच्छी मिलती है परंतु इसका लाभ उन आदिवासी हस्तियों को प्राप्त नहीं होता क्योंकि मध्यस्थ इन के उत्पादों को कम से कम कीमत पर खरीद लेते हैं।

समस्या के निराकरण एवं आदिवासी हस्तशिल्पियों को प्रोत्साहन हेतु सुझाव

- शिक्षा का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करना।
- जनजातीय परंपरागत हस्तशिल्प को सरकार द्वारा प्रोत्साहन देना।

- जनजाति में उनके उत्कृष्ट उत्पादों के प्रति जागरूकता लाना।
- जनजातियों को स्वास्थ एवं सुरक्षा के प्रति जागरूक करना।
- कच्चा माल उचित कीमतों पर उपलब्ध कराना।
- शिल्पीयों को प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था कराना।
- वित्तीय सहायता प्राप्ति की प्रक्रिया को आसान बनाना।
- शासन द्वारा संचालित कल्याणकारी योजनाओं का अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार होना चाहिए।
- अत्याधुनिक तकनीकी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करना।
- मध्यस्थों का उन्मूलन करना।
- जनजातीय क्षेत्रों में आयात एवं संचार के साधनों का विकास।
- नवीन तकनीकों का प्रयोग कर लागत को कम करना।
- वितरण के लिए समय–समय पर स्थानीय स्तर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मेले एवं प्रदर्शनियों का आयोजन करना।
- सरकार द्वारा इन अनमोल धरोहरो का विभिन्न माध्यमों से प्रचार एवं प्रसार करना।

निष्कर्ष

हस्तशिल्प उद्योग आदिवासियों की कलात्मक सृजनात्मक एवं सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करते हैं। हस्तशिल्प उनके आदिवासियों को सदियों से रोजगार मुहैया कराते रहे हैं साथ ही मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में इनके निर्यात में भी आदिवासी हस्तशिल्प की अहम भूमिका है परंतु वर्तमान समय में अनेक हस्तशिल्प उद्योगों का लोप हो गया है साथ ही बहुत से लोप की कगार पर हैं क्योंकि इनसे जुड़े हस्तशिल्पियों को वर्तमान समय में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है इन उद्योगों को बचाने के लिए सरकारी संरक्षण की आवश्यकता है ना कि प्रलोभन की। हस्तशिल्प उद्योग पर्यावरण हितैषी होते हैं इनका संरक्षण बचाव एवं समृद्धि इन आदिवासियों के विकास के साथ–साथ देश के विकास के लिए भी आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.Utpreti, Harishchandra (1970) : "Indian Tribes", Samajik Vigyan Hindhi Reachna Kendra, Rajasthan, Vishwavidyalaya P.l

2. Hutton J H (1938) "Census Report of India ",1931 Vol.l,Pt. New Delhi

3. Banies A, (1891) "Census of India "1891 Report Vol.lPt.lP.320

4.सर हबर्ट रिसले "दी पीपुल आफ इंडिया" 1935, पृष्ठ –20

5. जनगणना –2011

6. tribal.mp.gov.in

7.डॉ.यू.सी .जैन – "भारत के जनजातीय समाज का आर्थिक अध्ययन" (मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में) प्रकाशक मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2017 पृष्ठ कृ.54–55

8.डॉ गोपाल कृष्ण अग्रवाल, डॉ मीनाक्षी अग्रवाल "जनजातीय समाज का समाजशास्त्र" एसबीपीडी पब्लिकेशन हाउस आगरा 2014 पृ.क्र. 258

9.वही पृ.क्र.–185–186